दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-8

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

DTVF / OPT-23 **HL-2308**

निर्धारित समय: तीन घंटे	*अधिकतम अंक : 250*
Time Allowed: Three Hours	*Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Sandeep Kumar Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10/8/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

6	3	1	2	8	1	9

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language Flow (भाषा प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ एवं प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ "एक दुनिया समानान्तर" से उद्धृत है इन पंक्तियों में पति द्वारा पत्नी के झगड़े का वर्णन है

व्याख्या :-

इन पंक्तियों में एक महिला के जीवन के सत्य को बताने का प्रयास किया है। इनमें महिला के साथ पति द्वारा बुरा व्यवहार किया जाने पर भी सहन करते जाने को बताने का प्रयास हुआ है।

विशेष :-

ऐसा ही चित्रण मैला आंचल में भी मिलता है जहाँ डॉक्टर को एक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महिला के बीमार होने पर कहता है -
"लड़की जात है बिना दवा दारु के ठीक हो जायेगी।"

विशेष :-

① भाषा तद्भव शब्दों से युक्त है
② प्रतीकों का प्रयोग हुआ है
"कीमती है . . . ।"

प्रासंगिकता :-

वर्तमान समय में महिला के शोषण के स्वरूप अधिक भयावह हुये हैं। 1980 के शहरी जीवन की विडंबना अब गाँवों तक भी पहुँच रही है। गाँवों में भी संबंधों में अलगाव आदि देखने को मिल रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ / प्रसंग :- व्याख्येय पंक्तियाँ "निबंध निलय" से ली गई हैं। इन पंक्तियों भारतीय संस्कृति के क्षेत्र महत्व एवं समस्या को बताया है।

व्याख्या :- इन पंक्तियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू जाति के विभिन्न जाति, संप्रदाय में विभाजन को बताया है। विभिन्न मतों के विभाजन को देखने को मिल रहा है। यह विभाजन वर्तमान समय में अधिक देखने को मिलता है।

भारतीय संस्कृति का यही विभाजन विभिन्न संप्रदायों में बँटता हुआ जा रहा है। इन्होंने भारत में देश के विभाजन का स्वरूप भी देखने को मिलता है। भारत-पाक विभाजन के समय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की सांप्रदायिक हिंसा, विभिन्न जातियों की हिंसा देखने को मिल रही है यह हिंसा वर्तमान समय में और अधिक देखने को मिल रही है

~~शिल्प~~ शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा तद्भव शब्दों से युक्त है
2. भाषा में मुहावरों व ~~लोकोक्तियों~~ लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है

"एक नारी जब दो से कैसी ...।"

प्रासंगिकता :

वर्तमान समय में मणिपुर व नूह हरियाणा की हिंसा भारतीय समाज के विभाजन को बताती है यह हिंसा समाज, राष्ट्र आदि पर कलंक के रूप में देखने को मिल रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग : व्याख्येय पंक्तियाँ मार्क्सवादी रचनाकार यशपाल की प्रतिनिधि रचना "दिव्या" से लिया गया है इसमें पृथुसेन के पिता नारी के प्रति अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं।

व्याख्या :

इन पंक्तियों में नारी को साधन के रूप में बताने का प्रयास हुआ है नारी जीवन में आगे बढ़ने में यदि अवरोध का काम करे। यह सोच पितृसत्तात्मक समाज की अवधारणा है जिसमें नारी को मनुष्य के लिए व्यवधान एवं शोषण का साधन माना है।

अतः यही चिंतन हमें मध्यकाल के कवियों के यहाँ भी देखने को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मिलता है। इसमें कबीर कहते हैं-

"एक नारी सांई परत अंधा होत भुवंग
कबीरा उनकी क्या गति जो नित नारी के संग।"

विशेष :-

1. तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है
"आत्मनं सततं - - - ।"
2. सूत्र शैली का प्रयोग हुआ है
"पुरुष, स्त्री भोग्य है।"
3. भाषा में प्रवाह है।

प्रासंगिकता : वर्तमान समय में नारी का वस्तुकरण अधिक हुआ है। इसमें देह व्यापार, रिश्तों का टूटना आदि देखने को मिलते हैं। समकालीन कविता कहती है-

"खुले-खुले बदन पर साबुन का झाग
हो गई है औरत,
पान पराग हो गई है औरत।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर.... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

संदर्भ/प्रसंग : उपर्युक्त गद्यांश "एक दुनिया समानान्तर" से उद्धृत है। इसमें अस्तित्ववाद, नई कहानी के दौर में मानव की लघुता का बोध कराती है।

व्याख्या : यहाँ मानवीय मूल्य, संवेदना का कोई महत्व नहीं है। आदमी मनुष्य के गुणों को खोता हुआ नजर आता है। महिला शोषण के भी विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं।

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा तद्भव शैली में लिखी गई है।
2. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. संश्लिष्ट बिंबों का प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :-

वर्तमान समय में समाज मूल्यों के पतन की दिशा की ओर गति कर रहा है। जहाँ सोशल मीडिया, इंटरनेट ने अधिक गति प्रदान किी है। दिल्ली में एक लड़की की हत्या के समय सभी मूकदर्शक थे। यह सामाजिक पतन का जीवन्त उदाहरण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

संदर्भ एवं प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक "स्कन्दगुप्त" से उद्धृत है। इसमें देवसेना ~~प्रकृ~~ प्रकृति के कोमलता का वर्णन करती है।

व्याख्या :- प्रत्येक परमाणु को संगीत के साथ जोड़ती है। मनुष्य के विकृत स्वर को बताने का प्रयास करते हैं। यह प्रकृति का विध्वंश के रूप में सामने आता है। प्रकृति के स्वर मनुष्य से भिन्न एवं सारगर्भित है।

शिल्प सौंदर्य :-

① तत्सम एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है।
- चहचह - तद्भव
- परमाणु - तत्सम

② भाषा में गेयात्मकता का गुण ~~देखने~~ मिलता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है।

<u>प्रासंगिकता</u> : वर्तमान समय में मानव द्वारा प्रकृति के शोषण ने संपूर्ण पृथ्वी को तहस-नहस कर दिया। मनुष्य जाति के विकास ने झरनों, नदियों आदि को दूषित किया है। समकालीन कविता कहती है —

"शुद्ध जल रह जायेगा नारियल में।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'जिंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

नई कहानी की मुख्य विशेषता लघु मानव बोध, संबंधों में संवाद का अभाव को देखने को मिलता है।

अमरकांत ने मध्य वर्ग की समस्या के स्थान पर निम्न वर्ग की समस्या को उठाया है। जिंदगी और जोंक कहानी में "रजुआ" के माध्यम से शोषण के आयामों को दिखाया है।

अमरकांत की "जिंदगी और जोंक" कहानी में नई कहानी के विशिष्ट्य :-

① रजुआ को पूरे मोहल्ले द्वारा शोषण किया जाता है।

② एक दिन साड़ी चोरी होने पर रजुआ को बुरी तरह पीटा जाता है। उसमें उसका कोई दोष भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

नही है बाद में कहानीकार कहता है –

"गरीब आदमी और नींबू . . . ।"

③ पूरे मोहल्ले द्वारा कोई न कोई काम करवाया जाता है लेकिन बीमार होने पर कोई ध्यान नहीं देता है।

④ कहानी के अंत में हैजा द्वारा मरने के लिए छोड दिया जाता है लेकिन किसी के द्वारा इलाज नहीं करवाया जाता है

⑤ कहानीकार कहता है कि जिंदगी जोंक की तरह न तो उसे मरने दे रही है और न ही जीने दे रही है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

⑥ ~~कहानीकार~~ गरीब व्यक्ति केवल पेट भरने के लिए किस प्रकार शोषण का शिकार है यह अमरकांत का मंतव्य है।

⑦ नई कहानी भी अपने तक सीमित है उसी प्रकार जिंदगी और जोंक भी मध्य वर्ग को अपने तक सीमित करता है।

समग्रत: नई कहानी की विशेषता जिंदगी और जोंक में देखने को मिलती है जहाँ रजुआ अपने जीवन को अभिशाप एवं मरने का इंतजार जिजीविषा के साथ करता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्कंदगुप्त (1928) में जयशंकर प्रसाद का राष्ट्रीय चेतना के लिए लिखा गया नाटक है। इस नाटक का मूल उद्देश्य स्वतंत्रता की प्राप्ति है।

स्कंदगुप्त नाटक चरित्र प्रधान नाटक है। इसमें स्कंदगुप्त को राष्ट्र के नायक के रूप में दिखाने का प्रयास हुआ है।

स्कंदगुप्त नाटक के नामकरण का आधार:

① स्कंदगुप्त नाम ऐतिहासिकता का निर्वाह करता है। यह नाटक गुप्त साम्राज्य के इस ऐतिहासिक वर्चस्व को ही उजागर करता है।

② स्कंदगुप्त नाटक में स्कंदगुप्त राष्ट्र पर आने वाले सभी संकटों का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का समाधान करता है।

(3) कथानक को स्पष्टता एवं अन्य औदार्य के गुणों से पुष्ट है।

(4) ~~स्कंदगुप्त के~~

स्कंदगुप्त के स्थान पर अन्य नामकरण संपूर्णता का निर्वाह नहीं कर पाती जैसे देवसेना पर हूणों पर विजय।

(1) देवसेना ऐतिहासिक चरित्र नहीं है।

(3) हूणों पर विजय तात्कालीन स्वतंत्रता संघर्ष को बताने में असमर्थ रहता है।

समग्रतः जयशंकर प्रसाद द्वारा स्कंदगुप्त नाटक का नामकरण सबसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चरित्र नामकरण है। यह नाटक की समग्र एवं चरित्रता का बोध कराता है।

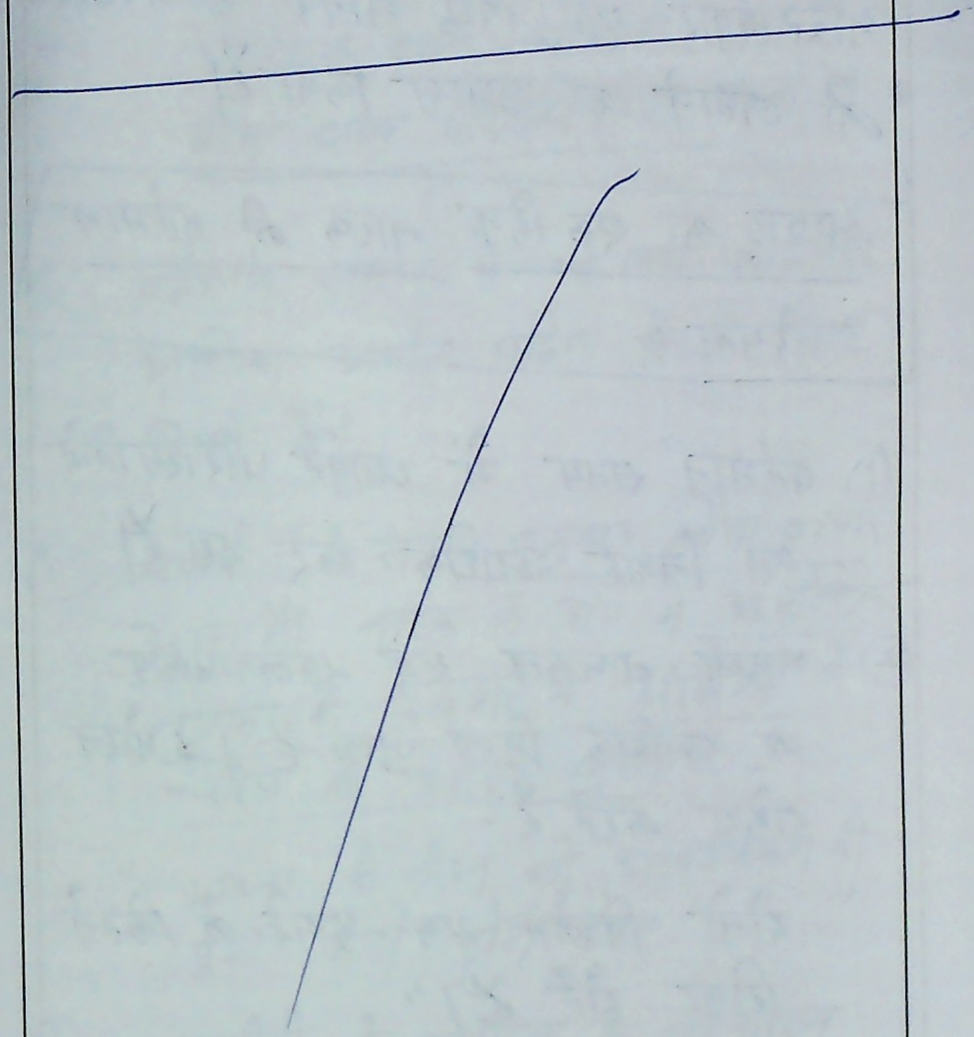

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की वर्तमान उपादेयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आषाढ़ का एक दिन (1958) मोहन राकेश का प्रथम नाटक है। इसमें अस्तित्ववाद एवं लघु मानव की अवधारणा को बताने का प्रयास किया है।

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक की वर्तमान उपादेयता :-

① वर्तमान समय में व्यक्ति परिस्थितियों का निर्वाह अधिक कर रहा है।

② मनुष्य नायकत्व एवं खलनायकत्व का अधिक मिला जुला है। मोहन राकेश कहते हैं-

" दोनों विलोम एक-दूसरे के कितने निकट होते हैं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

③ नाटक की भूमिका में मोहन राकेश का कथन -

" व्यक्ति के व्यक्तित्व में योग्यता का योगदान एक-चौथाई होता है शेष काम परिस्थितियाँ करती हैं।

④ वर्तमान समय में भी त्याग की उम्मीद मल्लिका अर्थात महिला से ही की जाती है।

⑤ पद्मावत के समय मनुष्य बौना नजर आता है। नाटक के अंत में अंबिका नाटक के शुरुआत में अंबिका के चरित्र को धारण करती है -

" भावना से जीवन की आवश्यकता की पूर्ति कैसे होती है।"

⑥ राजनीति के चरित्र के उद्घाटन मातुल के द्वारा करवाया गया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है -
"राजनीति में जो होता है दिखता नहीं है"

(7) ग्रामीण समाज के लिए प्रकृति एक साहचर्य की भूमिका में है वहीं नगरीय समाज प्रकृति को भोगवादी दृष्टिकोण से देखता है

"हम जिएँगे न हरिणशावक ...।"
(कालीदास)

"यहाँ की वस्तुओं के चले ..."
(प्रियंगु)

अर्थात "आषाढ का एक दिन" आज का व आज के लिए लिखा गया नाटक है यह नाटक संपूर्ण विशेषताओं के साथ वर्तमान समय में प्रासंगिक है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश अज्ञेय के निबंध संवत्सर से लिया गया है। इसमें मनुष्य के जिज्ञासु भाव के बारे में बताने का प्रयास हुआ है

व्याख्या :- जीवन में कुछ प्रश्नों को जानना जरूरी है। उनका समाधान करना आवश्यक नहीं है। जीवन का उद्देश्य इसी में है कि उन प्रश्नों के साथ सार्थकता के निर्धारण में है

जीवन में जिज्ञासु भाव के साथ रहना अधिक सार्थक बनाता है। जिज्ञासु भाव के साथ अधिक सार्थक जीवन जी सकते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तद्भव है। तत्सम शब्दों का प्रभाव भाषा के प्रभाव में वृद्धि करती है

"जिज्ञासुवत्"

2. भाषा में सहज चिंतन हुआ है

प्रासंगिकता :- वर्तमान समय में युवापीढ़ी इंटरनेट, सोशल मीडिया पर निरुद्देश्य जीवन व्यतीत कर रही है यह समय मुट्ठी में रेत के समान फिसल रहा है ऐसे में जीवन की सार्थकता जिज्ञासुवत होकर जीने में है यही जिज्ञासा हमें जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण के साथ है -

"अंधकार को क्यों धिक्कारें
अच्छा है एक दीप जलायें।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ / प्रसंग :- दिया गया गद्यांश "एक दुनिया समानान्तर" की कहानी विजेता से उद्धृत है इसमें रघुवीर सहाय अवांछित गर्भ धारण की समस्या को बताया है इसमें पत्नी द्वारा पति को बच्चे पर दो बार गर्भ ~~धारण~~ पात की दवा की विफलता के बारे में बताया है।

व्याख्या :- 1980 में नगरीय जीवन में उपर्युक्त समस्या देखने को मिलती है। पत्नी बच्चे की जिजीविषा का वर्णन करती है वह बताती है आपके पहले के दो बार के प्रयासों ने मुझे शारीरिक पीड़ा ही दिया है मेरे साथ-साथ बच्चे को भी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा तद्भव शब्दों से युक्त है।

2. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

"एक चीज थी . . . ।"

3. भाषा में नई कहानी की विशेषताओं का निर्वहन करती है।

प्रासंगिकता : वर्तमान समय में महिलाएँ "राइट टू च्वाइस" जैसे अधिकारों की मांग कर रही है वैवाहिक जीवन के तनाव इस समय अधिक मुखर होकर सामने आ रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

संदर्भ/प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश "परिन्दे" कहानी से लिया गया है यह कहानी निर्मल वर्मा द्वारा लिखी गई है इस कहानी से नई कहानी का प्रारंभ भी माना जाता है

व्याख्या : इस कहानी में निर्मल वर्मा अकेलेपन, कुंठा, निराशा जैसे ~~भाव~~ मनोभावों को उभारते है यही बात इन ~~कहानियों~~ पंक्तियों में भी स्पष्टता के साथ आती है हॉस्टल वार्डन के रूप में कार्य करती हुई वह अपने पिछले जीवन के दुखद अनुभवों को व्यक्त करती है

यह निराशा अवसाद का भावबोध यशपाल के उपन्यास दिव्या में दिव्या के यहाँ भी है मोहन राकेश के यहाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

[illegible] [illegible] इन्हीं भावों का [illegible] जाते हैं

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तद्भव शब्दों से युक्त है

2. प्रतीकात्मक भाषा।

3. पद्य जैसा प्रवाह है।

प्रासंगिकता :-

वर्तमान समय में लघु-मानव की अवधारणा अधिक गहराई तक गई है। 13 वर्ष के बच्चे अपने जीवन को समाप्त कर रहे हैं। कोटा जैसे शहर छात्रों के कब्रगाह बन रहे हैं। यही तनाव प्रत्येक मनुष्य के जीवन में इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि ने अधिक किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ / प्रसंग :- व्याख्येय गद्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक "स्कंदगुप्त" से लिया है। इस नाटक में ~~स्वत्व~~ लेखक स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य बताते हैं।

व्याख्या :- इन पंक्तियों में देवसेना स्कंदगुप्त के विवाह प्रस्ताव को नकारती है। अपने जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित करती है। देवसेना ने भारतीय दर्शन के क्षणभंगवाद को भी इन पंक्तियों के माध्यम से बताने का प्रयास किया है।

यही दर्शन छायावाद का दर्शन है जिसमें नारी पात्र अधिक सशक्त व अधिक त्याग करती है। प्रेमचंद के यहाँ मेहता की मालती भी इसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नरह नकारती है

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है।
2. सूत्र शैली का प्रयोग
"सब क्षणिक सुखों का अंत है।"
3. समास शैली का प्रयोग किया है।

प्रासंगिकता :- इन पंक्तियों के माध्यम से जीवन के भोगवादी नजरिये से विमुख होने की प्रेरणा मिलती है यह वर्तमान समय की युवा पीढ़ी जो नशे व रिश्तों के तनाव से गुजर रही है यह प्रेरणा ले सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

संदर्भ / प्रसंग :- उपर्युक्त गद्यांश "आषाढ़ का एक दिन" नाटक से उद्धृत है। इस नाटक की रचना मोहन राकेश ने की है। इस नाटक में अस्तित्ववाद एवं लघुमानववाद की अवधारणा देखने को मिलती है। यह पंक्तियाँ नाटक के अंत में कालीदास द्वारा मल्लिका कही है।

व्याख्या :- इन पंक्तियों में कालिदास कहते हैं आप मुझे पहचानती नहीं हो क्योंकि परिस्थितियों के कारण मेरे व्यक्तित्व में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

नई कहानी, नव नाटक एवं नव उपन्यास का दौर 1960 के साठोत्तर संसार को लघु मानव की अवधारणा से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

[illegible] करता है। मानव मुख्यत: पहचान के संकट से गुजर रहा है।

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा में नाटकीयता का गुण है।

2. भाषा में पद्य जैसी प्रवाह देखने को मिलता है।

3. चेतना प्रवाह शैली का निर्वाह हुआ है।

4. प्रतीकों का प्रयोग।

प्रासंगिकता :- जीवन में परिस्थितियों का योगदान महत्वपूर्ण हुआ है। परिस्थितियाँ मानव के जीवन में 3/4 योगदान करती है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया एवं इंटरनेट ने अनामिकता को अधिक बढ़ावा दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते है? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैला आँचल (1954) में फ० रेणु द्वारा लिखा गया प्रथम आँचलिक उपन्यास है। रेणु अपने उपन्यास में मेरीगंज की संपूर्ण समस्याओं एवं विशेषताओं को उभारते हैं।

आंचलिक होते हुए भी मैला आंचल आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और वह मेरीगंज मैक्रोस्कोपिक लेवल पर संपूर्ण राष्ट्र का साक्षात्कार करता है :-

① मैला आंचल राजनीति के यथार्थ को आजाद भारत में पहचानता है –
"यादव को मेरीगंज जाना चाहिए ...।"

② भ्रष्टाचार को समझता है। रेणु कहते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है :-

"कांग्रेस पार्टी में बावनदास की हत्या गाँधीवादी मूल्यों की हत्या है।"

3. नारी के शोषण को गोदान से अधिक गहराई पर जाकर पहचानता है -

"... बूढ़ी, जवान, दौड़ो मत...।"

"हुजूर लड़की जात है बिना दवा दारू के ही ठीक हो जायेगी।"

4. प्रत्येक गाँव में कुपोषण व गरीबी राष्ट्रीय स्तर पर अधिक व्यापकता के साथ देखने को मिलती है।

5. गाँव में अंधविश्वास व डायन की प्रथा राष्ट्रीय स्तर पर भी देखने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को मिलती है।

6. "मठ के शोषण, लक्ष्मी के माध्यम से महिला के शोषण को दिखाया है -

"रोता के रोने की अवाज... पत्थर भी पिघल जाये।"

(7) किसानों का शोषण तहसीलदार के माध्यम से दिखाया है -

"खलिपान में... खटनी फिर पढ़ती ... टिप लगाओ।"

(8) स्थानीय एवं आंचलिक मिठास भारत के प्रत्येक गाँव के लोगों के जीवन में मधुरस बरसा रही है -

"विद्यापत के ~~अ~~ गान कहाँ ... गरीब

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

को झोंपडियों में - - - ।"

(१) बावनदास की हत्या कांग्रेस पार्टी में गाँधीवादी मूल्यों की हत्या देखने को मिलती है।

समग्रतः मैला आँचल राष्ट्रीय समस्याओं को माइक्रोस्कोपिक लेवल पर जाकर मेरीगंज के धरातल पर देखता है जहाँ स्वयं लेखक कहता है — फूल भी है धूल भी है, कीचड भी है।" अर्थात संपूर्णता के माध्यम से कथ्य की अभिव्यक्ति की गई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

अलग्योझा कहानी प्रेमचंद ने संयुक्त परिवार की सामाजिक सुरक्षा के महत्व पर बल दिया है।

अलग्योझा कहानी का कथ्य :-

(1) रग्घु की सौतेली माँ द्वारा उचित व्यवहार न करना।

(2) रग्घु के पिता की मौत की बाद रग्घु पूरी जिम्मेदारी उठाता है।

(3) रग्घु का विवाह होने के बाद रग्घु परिवार में अनबन होती है।

(4) रग्घु की जल्दी मौत के बाद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रघु की पत्नी का वैचारिक जीवन।

① रघु की पत्नी को सामाजिक सुरक्षा रघु के दोहरे मार्ग से शादी।

अंत में रघु की पत्नी व सौतेली माँ अच्छे से साथ रहती है अर्थात् ~~रघु~~ प्रेमचंद संयुक्त परिवार में सामाजिक सुरक्षा को बेहतर दृष्टिकोण से देखते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपांतरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाभोज (1976) में मन्नू भंडारी द्वारा लिखा गया उपन्यास है इस उपन्यास में लेखिका अपने कर्तव्य बोध के माध्यम से राजनीति के यथार्थ को समझने का प्रयास करती है।

नाट्य रूपांतरण को रंगमंच पर सफल करने वाले बिंदु:-

(1) नाटक के मुख्य गुण मंचन का निर्वाह।

(2) संवाद शैली

(i) मौन की भाषा
- दा साहब

(ii) पात्रों के संवाद पात्रों की विशेषता को बताते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदा. "अंदर-ही अंदर हिटपट...।"

(iii) पात्रों के अनुकूल भाषा

3. दृश्य योजना :- नाटक में दृश्य योजना का निर्वाह दा साहब का कमरा, पुलिस थाना आदि।

4. पात्रों के संबंध निर्वाह बेहतर हुआ है। पात्रों को आवश्यकता के अनुसार स्थान दिया है।

5. भाषा में सजीवता

"मरे हुए आदमी और सोए हुए आदमी के अंतर ही कितना होता है।"

समग्रत: महाभोज नाटक के गुणों को धारण करता है यह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कथानक, भाषा, संवाद, उद्देश्य के साथ-साथ मंचन के गुणों को भी धारण करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत दुर्दशा (1875) में भारतेन्दु द्वारा रचित नाटक है। इस नाटक में भारत की दुर्दशा के आंतरिक एवं बाह्य कारणों का उल्लेख है। इसके जागरण की प्रेरणा देखने को मिलती है।

भारत-दुर्दशा को त्रासदी माना जा सकता है क्योंकि :-

1. भारत दुर्दैव की सेनाओं के कारण भारत अंतिम अंक में मरने का दृश्य है।
2. भारत-भाग्य द्वारा की कोई सहायता नहीं मिलती है।
3. भारत की दुर्दशा के वास्तविक कारण भारत के अंदर ही मौजूद है। जैसे - आलस्य, निद्रा, मदिरा आदि

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. भारत के उद्धार करने वाले मध्यवर्ग किंकर्तव्यमूढ़ है। मध्यवर्ग गोदान एवं महाभोज में भी अकर्मण्यता का शिकार है।

"मध्यवर्ग है किराएदार
किराए के विचारों का उद्भास।"

~~8. भारत~~

उपर्युक्त कारणों से इसे ट्रेजडी माना जा सकता है। लेकिन भारतेंदु ने ट्रेजडी की रचना नहीं की है। पूर्ण रूप से ट्रेजडी के गुणों का निर्वाह नहीं करती है।

भारत दुर्दशा नाटक में भारतेन्दु दुर्दशा के कारणों को पहचानते है। उनके समाधान का प्रयास भी करते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है—

(1) शिक्षा का महत्व :

"विद्या सूर्य ~~सं~~ पश्चिम . . . ।"

(2) राजाओं के शासन में कमियाँ :

"मूर्खों के शासन के दिन गए . . . ।"

(3) आर्थिक शोषण की पहचान :

"सब धन विदेश चलि जात है
. . . ख्वारि।"

(4) भारत के उद्धार का उपाय 20करोड़ लोगों के हाथों में है।

"बीस कोटि सुत होत . . . ।"

समग्रत: भारतेन्दु ने ट्रेजडी नहीं लिखने का प्रयास किया है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

भारतेन्दु ने भारत दुर्दशा के माध्यम से देश की समस्याओं के वास्तविक कारणों को पहचानते हैं और नवजागरण को दिशा देते हैं इस कार्य में भारतेन्दु को सफलता मिलती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने में ठीक है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

रेणु ने मैला आँचल (1954) में लिखा है यह उपन्यास गोदान की तरह संपूर्ण समस्याओं को समग्रता से स्थानीय स्तर पर दिखाने का प्रयास करता है गोदान जहाँ समस्याओं को माइक्रोस्कोपिक अर्थात राष्ट्रीय स्तर पर वहीं मैला आंचल मैक्रोस्कोपिक अर्थात मेडीगंज में देखता है।

गोदान के बाद की कथा मैला आँचल को मानने के आधार :-

① नारी का शोषण : गोदान में नारी शोषण बेमेल विवाह, सिलिया आदि पात्रों के माध्यम से नजर आता है लेकिन धनिया के माध्यम से चेतना एवं समग्र उद्धार का भाव भी है वहीं मैला आंचल में

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

डायन से लेकर सामूहिक बलात्कार एवं मठ के माध्यम से लड़की का शोषण -

" हुजूर लड़की जात है बिना दवा दारू के ठीक हो जायेगी।"

② गोदान में जाति आधारित शोषण है वहीं मैला आंचल में जातिवाद देखने को मिलता है संपूर्ण जाति में सामूहिकता का भाव है।

" मेरीगंज में यादव को भैंजना उचित रहेगा।"

③ मैला आंचल में तहसीलदार द्वारा किसानों का शोषण होता है। वहीं गोदान में दातादीन, पटेश्वरी और रायसाहब शोषण के प्रतीक है।

④ कांग्रेस पार्टी में गांधीवादी मूल्यों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का पतन मैला आंचल में अधिक गहराई में बावनदास की हत्या के रूप में देखने को मिलता है वहीं गोदान में धनिया कहती है -

" सुराज मिलेगा धर्म से न्याय से।"

⑤ निम्न शोषण अधिक है -
- मजदूरों का शोषण
- धर्म संगठित - मठ
- नशे का कारोबार
- लोकतंत्र एवं राजनीति धनिक तंत्र से धनिक व अपराधियों का तंत्र।

समग्रत : गोदान के अगले स्तर की प्रगतिशीलता अधिक गहराई के साथ मैला आंचल में देखने को मिलती है। यह आजादी के बाद की वास्तविकताओं को साहित्य पहचानने की कोशिश करता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कफन कहानी प्रेमचंद द्वारा 1936 में लिखी आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है इस कहानी में गरीबी एवं भूख की विभीषिका को दिखाया है

'कफन' की संवेदना :-

1. गरीबी में सभ्यता को खाने की क्षमता होती है।
2. घीसू एवं माधव के माध्यम से मजदूर एवं किसानों की समस्या को बताया।
3. घीसू द्वारा एक बार भरपेट खाने का वृतांत कितने सहजता के साथ आया है।
4. मेहनत करने वाले को भी भरपेट भोजन नहीं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. पत्नी की मौत के बाद रुपये उधार लेना -
"घीसू पर विश्वास करना काले कंबल पर रंग चढ़ाना।
6. रुपये हाथ में आने के बाद पहले भरपेट भोजन करना।
7. भरपेट भोजन करने के बाद भी भिखारी को भोजन देना।
8. भगवान में विश्वास नहीं करते हैं।

समग्रतः कफन कहानी वास्तविकता को पहचानती है एवं उसके अनुसार व्यवहार करती है। प्रेमचंद 1936 तक आते-आते आदर्शोन्मुख अंत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को छोड देते हैं। यही कहानी नई कहानी के लिए बीज कार्य करती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान
(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language Flow (भाषा प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ एवं प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ "एक दुनिया समानान्तर" से उद्धृत है इन पंक्तियों में पति द्वारा पत्नी के झगड़े का वर्णन है

व्याख्या :-

इन पंक्तियों में एक महिला के जीवन के सत्य को बताने का प्रयास किया है। इनमें महिला के साथ पति द्वारा बुरा व्यवहार किया जाने पर भी सहन करते जाने को बताने का प्रयास हुआ है।

विशेष :-

ऐसा ही चित्रण मैला आंचल में भी मिलता है जहाँ डॉक्टर को एक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महिला के बीमार होने पर कहता है -
"लड़की जात है बिना दवा दारु के ठीक हो जायेगी।"

विशेष :-

① भाषा तद्भव शब्दों से युक्त है
② प्रतीकों का प्रयोग हुआ है
"कीमती है . . . ।"

प्रासंगिकता :-

वर्तमान समय में महिला के शोषण के स्वरूप अधिक भयावह हुये हैं। 1980 के शहरी जीवन की विडंबना अब गाँवों तक भी पहुँच रही है। गाँवों में भी संबंधों में अलगाव आदि देखने को मिल रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ / प्रसंग :- व्याख्येय पंक्तियाँ "निबंध निलय" से ली गई हैं। इन पंक्तियों भारतीय संस्कृति के क्षेत्र महत्व एवं समस्या को बताया है।

व्याख्या :- इन पंक्तियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू जाति के विभिन्न जाति, संप्रदाय में विभाजन को बताया है। विभिन्न मतों के विभाजन को देखने को मिल रहा है। यह विभाजन वर्तमान समय में अधिक देखने को मिलता है।

भारतीय संस्कृति का यही विभाजन विभिन्न संप्रदायों में बँटता हुआ जा रहा है। इन्होंने भारत में देश के विभाजन का स्वरूप भी देखने को मिलता है। भारत-पाक विभाजन के समय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की सांप्रदायिक हिंसा, विभिन्न जातियों की हिंसा देखने को मिल रही है यह हिंसा वर्तमान समय में और अधिक देखने को मिल रही है

~~शिल्प~~ शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तद्भव शब्दों से युक्त है
2. भाषा में मुहावरों व ~~लोकोक्तियों~~ लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है

"एक नारी जब दो से कैसी ....।"

प्रासंगिकता :-

वर्तमान समय में मणिपुर व नूह हरियाणा की हिंसा भारतीय समाज के विभाजन को बताती है यह हिंसा समाज, राष्ट्र आदि पर कलंक के रूप में देखने को मिल रही है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग :- व्याख्येय पंक्तियाँ मार्क्सवादी रचनाकार यशपाल की प्रतिनिधि रचना "दिव्या" से लिया गया है इसमें पृथुसेन के पिता नारी के प्रति अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं।

व्याख्या :-

इन पंक्तियों में नारी को साधन के रूप में बताने का प्रयास हुआ है नारी जीवन में आगे बढ़ने में यदि अवरोध का काम करे। यह सोच पितृसत्तात्मक समाज की अवधारणा है जिसमें नारी को मनुष्य के लिए व्यवधान एवं शोषण का साधन माना है।

अतः यही चिंतन हमें मध्यकाल के कवियों के यहाँ भी देखने को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मिलता है। इसमें कबीर कहते हैं-

"एक नारी सांई परत अंधा होत भुवंग
कबीरा उनकी क्या गति जो नित नारी के संग।"

विशेष :-

1. तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है
"आत्मनं सततं - - - ।"
2. सूत्र शैली का प्रयोग हुआ है
"पुरुष, स्त्री भोग्य है।"
3. भाषा में प्रवाह है।

प्रासंगिकता : वर्तमान समय में नारी का वस्तुकरण अधिक हुआ है। इसमें देह व्यापार, रिश्तों का टूटना आदि देखने को मिलते हैं। समकालीन कविता कहती है-

"खुले-खुले बदन पर साबुन का झाग
हो गई है औरत,
पान पराग हो गई है औरत।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर.... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

संदर्भ/प्रसंग : उपर्युक्त गद्यांश "एक दुनिया समानान्तर" से उद्धृत है। इसमें अस्तित्ववाद, नई कहानी के दौर में मानव की लघुता का बोध कराती है।

व्याख्या : यहाँ मानवीय मूल्य, संवेदना का कोई महत्व नहीं है। आदमी मनुष्य के गुणों को खोता हुआ नजर आता है। महिला शोषण के भी विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं।

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा तद्भव शैली में लिखी गई है।
2. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. संश्लिष्ट बिंबों का प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :- वर्तमान समय में समाज मूल्यों के पतन की दिशा की ओर गति कर रहा है। जहाँ सोशल मीडिया, इंटरनेट ने अधिक गति प्रदान किया है। दिल्ली में एक लड़की की हत्या के समय सभी मूकदर्शक थे। यह सामाजिक पतन का जीवंत उदाहरण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक "स्कन्दगुप्त" से उद्धृत है। इसमें देवसेना ~~कुछ~~ प्रकृति के कोमलता का वर्णन करती है।

व्याख्या :- प्रत्येक परमाणु को संगीत के साथ जोड़ती है। मनुष्य के विकृत स्वर को बताने का प्रयास करते हैं। यह प्रकृति का विध्वंश के रूप में सामने आता है। प्रकृति के स्वर मनुष्य से भिन्न एवं सारगर्भित है।

शिल्प सौंदर्य :-

① तत्सम एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है।
- चहचह - तद्भव
- परमाणु - तत्सम

② भाषा में गेयात्मकता का गुण ~~देखने~~ मिलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. ~~प्रतीकात्मक~~ भाषा का प्रयोग हुआ है।

<u>प्रासंगिकता</u> :- वर्तमान समय में मानव द्वारा प्रकृति के शोषण ने संपूर्ण पृथ्वी को तहस-नहस कर दिया। मनुष्य जाति के विकास ने झरनों, नदियों आदि को दूषित किया है। समकालीन कविता कहती है —

"शुद्ध जल रह जायेगा नारियल में"

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'जिंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

नई कहानी की मुख्य विशेषता लघु मानव बोध, संबंधों में संवाद का अभाव को देखने को मिलता है।

अमरकांत ने मध्य वर्ग की समस्या के स्थान पर निम्न वर्ग की समस्या को उठाया है। जिंदगी और जोंक कहानी में "रजुआ" के माध्यम से शोषण के आयामों को दिखाया है।

अमरकांत की "जिंदगी और जोंक" कहानी में नई कहानी के विशिष्ट्य :-

① रजुआ को पूरे मोहल्ले द्वारा शोषण किया जाता है।

② एक दिन साड़ी चोरी होने पर रजुआ को बुरी तरह पीटा जाता है। उसमें उसका कोई दोष भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नही है बाद में कहानीकार कहता है –
"गरीब आदमी और नींबू . . . ।"

③ पूरे मोहल्ले द्वारा कोई न कोई काम करवाया जाता है लेकिन बीमार होने पर कोई ध्यान नहीं देता है।

④ कहानी के अंत में हैजा द्वारा मरने के लिए छोड दिया जाता है लेकिन किसी के द्वारा इलाज नहीं करवाया जाता है

⑤ कहानीकार कहता है कि ।जिंदगी जोंक की तरह न तो उसे मरने दे रही है और न ही जीने दे रही है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

⑥ ~~कहानीकार~~ गरीब व्यक्ति केवल पेट भरने के लिए किस प्रकार शोषण का शिकार है यह अमरकांत का मंतव्य है।

⑦ नई कहानी भी अपने तक सीमित है उसी प्रकार ।जिंदगी और जोंक भी मध्य वर्ग को अपने तक सीमित करता है

समग्रतः नई कहानी की विशेषता ।जिंदगी और जोंक में देखने को मिलती है जहाँ रजुआ अपने जीवन को अभिशाप्त एवं मरने का इंतजार ।जिजीविषा के साथ करता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्कंदगुप्त (1928) में जयशंकर प्रसाद का राष्ट्रीय चेतना के लिए लिखा गया नाटक है। इस नाटक का मूल उद्देश्य स्वतंत्रता की प्राप्ति है।

स्कंदगुप्त नाटक चरित्र प्रधान नाटक है। इसमें स्कंदगुप्त को राष्ट्र के नायक के रूप में दिखाने का प्रयास हुआ है।

स्कंदगुप्त नाटक के नामकरण का आधार:

① स्कंदगुप्त नाम ऐतिहासिकता का निर्वाह करता है। यह नाटक गुप्त साम्राज्य के इस ऐतिहासिक वर्चस्व को ही उजागर करता है।

② स्कंदगुप्त नाटक में स्कंदगुप्त राष्ट्र पर आने वाले सभी संकटों का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का समाधान करता है।

(3) कथानक को स्पष्टता एवं अन्य औदार्य के गुणों से पुष्ट है।

(4) ~~स्कंदगुप्त के~~

स्कंदगुप्त के स्थान पर अन्य नामकरण संपूर्णता का निर्वाह नहीं कर पाती जैसे देवसेना पर हूणों पर विजय।

(1) देवसेना ऐतिहासिक चरित्र नहीं है।

(3) हूणों पर विजय तात्कालीन स्वतंत्रता संघर्ष को बताने में असमर्थ रहता है।

समग्रतः जयशंकर प्रसाद द्वारा स्कंदगुप्त नाटक का नामकरण सबसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चरित्र नामकरण है। यह नाटक की समग्र एवं चरित्रता का बोध कराता है।

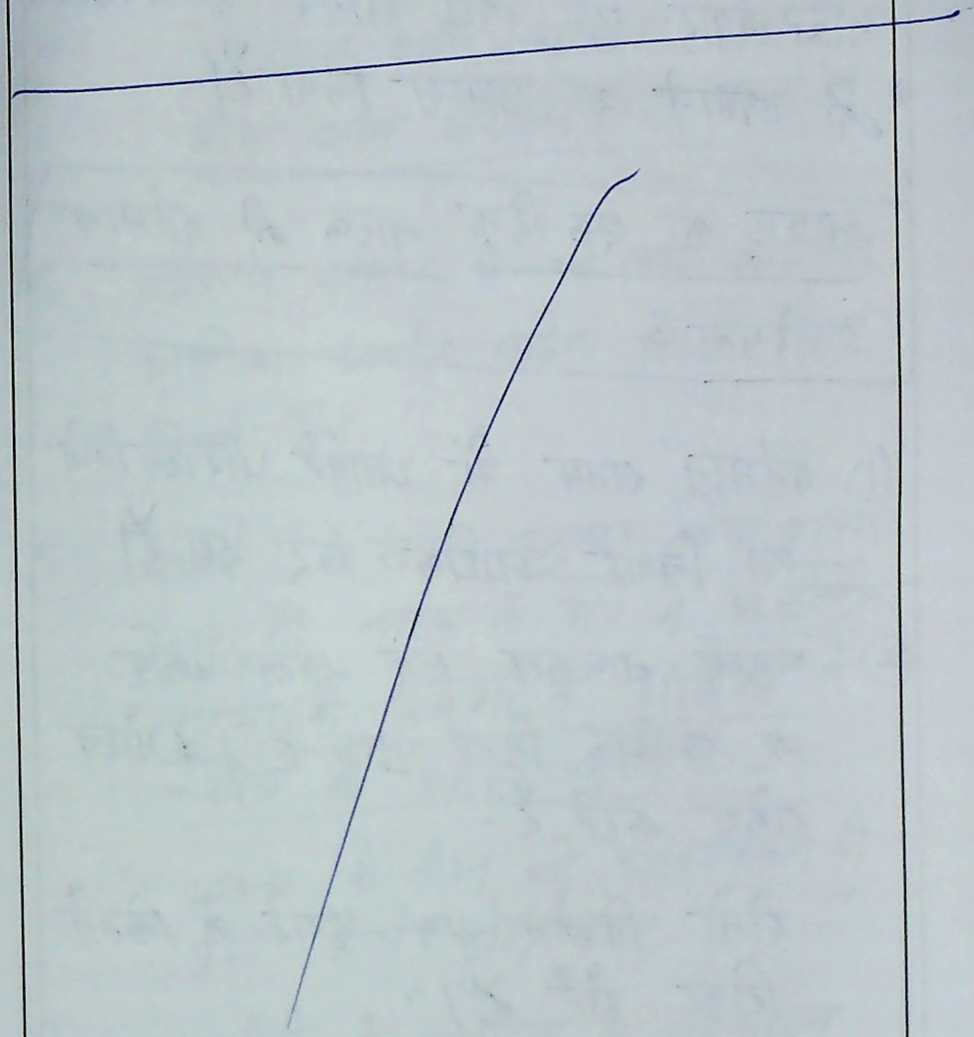

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की वर्तमान उपादेयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आषाढ़ का एक दिन (1958) मोहन राकेश का प्रथम नाटक है। इसमें अस्तित्ववाद एवं लघु मानव की अवधारणा को बताने का प्रयास किया है।

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक की वर्तमान उपादेयता :-

① वर्तमान समय में व्यक्ति परिस्थितियों का निर्वाह अधिक कर रहा है।

② मनुष्य नायकत्व एवं खलनायकत्व का अधिक मिला जुला है। मोहन राकेश कहते हैं-

" दोनों विलोम एक-दूसरे के कितने निकट होते हैं।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

③ नाटक की भूमिका में मोहन राकेश का कथन -

" व्यक्ति के व्यक्तित्व में योग्यता का योगदान एक-चौथाई होता है शेष काम परिस्थितियाँ करती हैं।

④ वर्तमान समय में भी त्याग की उम्मीद मल्लिका अर्थात महिला से ही की जाती है।

⑤ पद्मावत के समय मनुष्य बौना नजर आता है। नाटक के अंत में अंबिका नाटक के शुरुआत में अंबिका के चरित्र को धारण करती है -

" भावना से जीवन की आवश्यकता की पूर्ति कैसे होती है।"

⑥ राजनीति के चरित्र के उद्घाटन मातुल के द्वारा करवाया गया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है -
"राजनीति में जो होता है दिखता नहीं है"

(7) ग्रामीण समाज के लिए प्रकृति एक साहचर्य की भूमिका में है वहीं नगरीय समाज प्रकृति को भोगवादी दृष्टिकोण से देखता है

"हम जिएँगे न हरिणशावक ...।"
(कालीदास)

"यहाँ की वस्तुओं के चले ..."
(प्रियंगु)

अर्थात् "आषाढ का एक दिन" आज का व आज के लिए लिखा गया नाटक है। यह नाटक संपूर्ण विशेषताओं के साथ वर्तमान समय में प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश अज्ञेय के निबंध संवत्सर से लिया गया है। इसमें मनुष्य के जिज्ञासु भाव के बारे में बताने का प्रयास हुआ है

व्याख्या :- जीवन में कुछ प्रश्नों को जानना जरूरी है। उनका समाधान करना आवश्यक नहीं है। जीवन का उद्देश्य इसी में है कि उन प्रश्नों के साथ सार्थकता के निर्धारण में है

जीवन में जिज्ञासु भाव के साथ रहना अधिक सार्थक बनाता है। जिज्ञासु भाव के साथ अधिक सार्थक जीवन जी सकते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तद्भव है। तत्सम शब्दों का प्रभाव भाषा के प्रभाव में वृद्धि करती है

"जिज्ञासुवत्

2. भाषा में सहज चिंतन हुआ है

3.

प्रासंगिकता :- वर्तमान समय में युवापीढ़ी इंटरनेट, सोशल मीडिया पर निरुद्देश्य जीवन व्यतीत कर रही है यह समय मुट्ठी में रेत के समान फिसल रहा है ऐसे में जीवन की सार्थकता जिज्ञासुवत होकर जीने में है यही जिज्ञासा हमें जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण के साथ है -

"अंधकार को क्यों धिक्कारें
अच्छा है एक दीप जलायें।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

संदर्भ / प्रसंग :- दिया गया गद्यांश "एक दुनिया समानान्तर" की कहानी विजेता से उद्धृत है इसमें रघुवीर सहाय अवांछित गर्भ धारण की समस्या को बताया है इसमें पत्नी द्वारा पति को बच्चे पर दो बार गर्भ ~~धारण~~ पात की दवा की विफलता के बारे में बताया है।

व्याख्या :- 1980 में नगरीय जीवन में उपर्युक्त समस्या देखने को मिलती है। पत्नी बच्चे की जिजीविषा का वर्णन करती है वह बताती है आपके पहले के दो बार के प्रयासों ने मुझे शारीरिक पीड़ा ही दिया है मेरे साथ-साथ बच्चे को भी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा तद्भव शब्दों से युक्त है।

2. प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

"एक चीज थी . . . ।"

3. भाषा में नई कहानी की विशेषताओं का निर्वहन करती है।

प्रासंगिकता : वर्तमान समय में महिलाएँ "राइट टू च्वाइस" जैसे अधिकारों की मांग कर रही है वैवाहिक जीवन के तनाव इस समय अधिक मुखर होकर सामने आ रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ / प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश "परिन्दे" कहानी से लिया गया है यह कहानी निर्मल वर्मा द्वारा लिखी गई है इस कहानी से नई कहानी का प्रारंभ भी माना जाता है।

व्याख्या : इस कहानी में निर्मल वर्मा अकेलेपन, कुंठा, निराशा जैसे ~~भाव~~ मनोभावों को उभारते हैं यही बात इन ~~कहानियों~~ पंक्तियों में भी स्पष्टता के साथ आती है हॉस्टल वार्डन के रूप में कार्य करती हुई वह अपने पिछले जीवन के दुखद अनुभवों को व्यक्त करती है।

यह निराशा अवसाद का भावबोध यशपाल के उपन्यास दिव्या में दिव्या के यहाँ भी है मोहन राकेश के यहाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मानसिक कोलाहल इन्हीं भावों का उत्तर जोड़ते हैं

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तद्भव शब्दों से युक्त है।
2. प्रतीकात्मक भाषा।
3. पद्य जैसा प्रवाह है।

प्रासंगिकता :-

वर्तमान समय में लघु-मानव की अवधारणा अधिक गहराई तक गई है। 13 वर्ष के बच्चे अपने जीवन को समाप्त कर रहे हैं। कोटा जैसे शहर छात्रों के कब्रगाह बन रहे हैं। यही तनाव प्रत्येक मनुष्य के जीवन में इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि ने अधिक किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ/प्रसंग :- व्याख्येय गद्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक "स्कंदगुप्त" से लिया है। इस नाटक में लेखक स्वतंत्रता प्राप्ति का उद्देश्य बताते हैं।

व्याख्या :- इन पंक्तियों में देवसेना स्कंदगुप्त के विवाह प्रस्ताव को नकारती है। अपने जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित करती है। देवसेना ने भारतीय दर्शन के क्षणभंगवाद को भी इन पंक्तियों के माध्यम से बताने का प्रयास किया है।

यही दर्शन छायावाद का दर्शन है जिसमें नारी पात्र अधिक सशक्त व अधिक त्याग करती है। प्रेमचंद के यहाँ मेहता की मालती भी इसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नरह नकारती है

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है।
2. सूत्र शैली का प्रयोग
"सब क्षणिक सुखों का अंत है।"
3. समास शैली का प्रयोग किया है।

प्रासंगिकता :- इन पंक्तियों के माध्यम से जीवन के भोगवादी नजरिये से विमुख होने की प्रेरणा मिलती है यह वर्तमान समय की युवा पीढ़ी जो नशे व रिश्तों के तनाव से गुजर रही है यह प्रेरणा ले सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

संदर्भ / प्रसंग :- उपर्युक्त गद्यांश "आषाढ़ का एक दिन" नाटक से उद्धृत है। इस नाटक की रचना मोहन राकेश ने की है। इस नाटक में अस्तित्ववाद एवं लघुमानववाद की अवधारणा देखने को मिलती है। यह पंक्तियाँ नाटक के अंत में कालीदास द्वारा मल्लिका कही है।

व्याख्या :- इन पंक्तियों में कालिदास कहते हैं आप मुझे पहचानती नहीं हो क्योंकि परिस्थितियों के कारण मेरे व्यक्तित्व में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

नई कहानी, नव नाटक एवं नव उपन्यास का दौर 1960 के साठोत्तर संसार को लघु मानव की अवधारणा से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

[illegible] करता है। मानव मुख्यत: पहचान के संकट से गुजर रहा है।

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा में नाटकीयता का गुण है।

2. भाषा में पद्य जैसी प्रवाह देखने को मिलता है।

3. चेतना प्रवाह शैली का निर्वाह हुआ है।

4. प्रतीकों का प्रयोग।

प्रासंगिकता :- जीवन में परिस्थितियों का योगदान महत्वपूर्ण हुआ है। परिस्थितियाँ मानव के जीवन में 3/4 योगदान करती है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया एवं इंटरनेट ने अनामिकता को अधिक बढ़ावा दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते है? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मैला आँन्चल (1954) में फ० रेणु द्वारा लिखा गया प्रथम आँन्चलिक उपन्यास है। रेणु अपने उपन्यास में मेरीगंज की संपूर्ण समस्याओं एवं विशेषताओं को उभारते हैं।

आंन्चलिक होते हुए भी मैला आंन्चल आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और वह मेरीगंज माइक्रोस्कोपिक लेवल पर संपूर्ण राष्ट्र का साक्षात्कार करता है :-

(1) मैला आंन्चल राजनीति के यथार्थ को आजाद भारत में पहचानता है - "यादव को मेरीगंज जाना चाहिए ...।"

(2) भ्रष्टाचार को समझता है। रेणु कहते हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है -

"कांग्रेस पार्टी में बावनदास की हत्या गाँधीवादी मूल्यों की हत्या है।

3. नारी के शोषण को गोदान से अधिक गहराई पर जाकर पहचानता है -

"...बूढ़ी, जवान, दौड़ो मत...।"

"हुजूर लड़की जात है बिना दवा दारू के ही ठीक हो जायेगी।

4. प्रत्येक गाँव में कुपोषण व गरीबी राष्ट्रीय स्तर पर अधिक व्यापकता के साथ देखने को मिलती है।

5. गाँव में अंधविश्वास व डायन की प्रथा राष्ट्रीय स्तर पर भी देखने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को मिलती है।

6. "मठ के शोषण, लक्ष्मी के माध्यम से महिला के शोषण को दिखाया है -

" सीता के रोने की आवाज... पत्थर भी पिघल जायें।"

(7) किसानों का शोषण तहसीलदार के माध्यम से दिखाया है -

" खलिहान में... खटनी फिर पढ़ती... टिप लगाओ।"

(8) स्थानीय एवं आंचलिक मिठास भारत के प्रत्येक गाँव के लोगों के जीवन में मधुरस बरसा रही है -

" विद्यापत के गान कहाँ ... गरीब

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की झोंपडियों में ...।"

(1) बावनदास की हत्या कांग्रेस पार्टी में गाँधीवादी मूल्यों की हत्या देखने को मिलती है।

समग्रत: मैला आँचल राष्ट्रीय समस्याओं को माइक्रोस्कोपिक लेवल पर जाकर मेरीगंज के धरातल पर देखता है जहाँ स्वयं लेखक कहता है — फूल भी है धूल भी है, कीचड भी है।" अर्थात संपूर्णता के माध्यम से कथ्य की अभिव्यक्ति की गई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अलग्योझा कहानी प्रेमचंद ने संयुक्त परिवार की सामाजिक सुरक्षा के महत्व पर बल दिया है।

अलग्योझा कहानी का कथ्य :-

(1) रग्घु की सौतेली माँ द्वारा उचित व्यवहार न करना।

(2) रग्घु के पिता की मौत की बाद रग्घु पूरी जिम्मेदारी उठाता है

(3) रग्घु का विवाह होने के बाद रग्घु परिवार में अनबन होती है

(4) रग्घु की जल्दी मौत के बाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रघु की पत्नी का वैचारिक जीवन।

① रघु की पत्नी को सामाजिक सुरक्षा रघु के दोहरे मार्ग से शादी।

अंत में रघु की पत्नी व सौतेली माँ अच्छे से साथ रहती है अर्थात् ~~रघु~~ प्रेमचंद संयुक्त परिवार में सामाजिक सुरक्षा को बेहतर दृष्टिकोण से देखते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपांतरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महाभोज (1976) में मन्नू भंडारी द्वारा लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका अपने कर्तव्य बोध के माध्यम से राजनीति के यथार्थ को समझने का प्रयास करती है।

नाट्य रूपांतरण को रंगमंच पर सफल करने वाले बिंदु :-

(1) नाटक के मुख्य गुण मंचन का निर्वाह।

(2) संवाद शैली

(i) मौन की भाषा
– दा साहब

(ii) पात्रों के संवाद पात्रों की विशेषता को बताते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उदा. "अंदर-ही अंदर दिलचस्प...।"

(iii) पात्रों के अनुकूल भाषा

3. दृश्य योजना :- नाटक में दृश्य योजना का निर्वाह दा साहब का कमरा, पुलिस थाना आदि।

4. पात्रों के संबंध निर्वाह बेहतर हुआ है। पात्रों को आवश्यकता के अनुसार स्थान दिया है।

5. भाषा में सजीवता

"मरे हुए आदमी और सोए हुए आदमी में अंतर ही कितना होता है।"

समग्रत: महाभोज नाटक के गुणों को धारण करता है यह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कथानक, भाषा, संवाद, उद्देश्य के साथ-साथ मंचन के गुणों को भी धारण करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत दुर्दशा (1875) में भारतेन्दु द्वारा रचित नाटक है। इस नाटक में भारत की दुर्दशा के आंतरिक एवं बाह्य कारणों का उल्लेख है। इसके जागरण की प्रेरणा देखने को मिलती है।

भारत-दुर्दशा को त्रासदी माना जा सकता है क्योंकि :-

1. भारत दुर्दैव की सेनाओं के कारण भारत अंतिम अंक में मरने का दृश्य है।
2. भारत-भाग्य द्वारा की कोई सहायता नहीं मिलती है।
3. भारत की दुर्दशा के वास्तविक कारण भारत के अंदर ही मौजूद है। जैसे - आलस्य, निद्रा, मदिरा आदि

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. भारत के उद्धार करने वाले मध्यवर्ग किंकर्तव्यमूढ़ है। मध्यवर्ग गोदान एवं महाभोज में भी अकर्मण्यता का शिकार है।

"मध्यवर्ग है किराए
किराए के विचारों का उद्भास।"

~~8. भारत~~
उपर्युक्त कारणों से इसे ट्रैजडी माना जा सकता है। लेकिन भारतेंदु ने ट्रैजडी की रचना नहीं की है। पूर्ण रूप से ट्रैजडी के गुणों का निर्वाह नहीं करती है।

भारत दुर्दशा नाटक में भारतेन्दु दुर्दशा के कारणों को पहचानते है। उनके समाधान का प्रयास भी करते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है—

1. शिक्षा का महत्व :

"विद्या सूर्य पश्चिम ...।"

2. राजाओं के शासन में कमियाँ :

"मूर्खों के शासन के दिन गए ...।"

3. आर्थिक शोषण की पहचान :

"सब धन विदेश चलि जात है
... ख्वारि।"

4. भारत के उद्धार का उपाय 20 करोड़ लोगों के हाथों में है।

"बीस कोटि सुत होत ...।"

समग्रतः भारतेन्दु ने ट्रैजडी नहीं लिखने का प्रयास किया है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

भारतेन्दु ने भारत दुर्दशा के माध्यम से देश की समस्याओं के वास्तविक कारणों को पहचानते हैं और नवजागरण को दिशा देते हैं इस कार्य में भारतेन्दु को सफलता मिलती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने में ठीक है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

रेणु ने मैला आँचल (1954) में लिखा है यह उपन्यास गोदान की तरह संपूर्ण समस्याओं को समग्रता से स्थानीय स्तर पर दिखाने का प्रयास करता है गोदान जहाँ समस्याओं को माइक्रोस्कोपिक अर्थात राष्ट्रीय स्तर पर वहीं मैला आंचल मैक्रोस्कोपिक अर्थात मेडीगंज में देखता है।

गोदान के बाद की कथा मैला आँचल को मानने के आधार :-

① नारी का शोषण : गोदान में नारी शोषण बेमेल विवाह, सिलिया आदि पात्रों के माध्यम से नजर आता है लेकिन धनिया के माध्यम से चेतना एवं समग्र उद्धार का भाव भी है वहीं मैला आंचल में

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

डायन से लेकर सामूहिक बलात्कार एवं मठ के माध्यम से लड़की का शोषण -

" हुजूर लड़की जात है बिना दवा दारू के ठीक हो जायेगी।"

② गोदान में जाति आधारित शोषण है वहीं मैला आंचल में जातिवाद देखने को मिलता है संपूर्ण जाति में सामूहिकता का भाव है।

" मेरीगंज में यादव को भैंजना उचित रहेगा।"

③ मैला आंचल में तहसीलदार द्वारा किसानों का शोषण होता है। वहीं गोदान में दातादीन, पटेश्वरी और रायसाहब शोषण के प्रतीक है।

④ कांग्रेस पार्टी में गांधीवादी मूल्यों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का पतन मैला आंचल में अधिक गहराई में बावनदास की हत्या के रूप में देखने को मिलता है वहीं गोदान में धनिया कहती है -

" सुराज मिलेगा धर्म से न्याय से।"

⑤ निम्न शोषण अधिक है -
- मजदूरों का शोषण
- धर्म संगठित - मठ
- नशे का कारोबार
- लोकतंत्र एवं राजनीति धनिक तंत्र से धनिक व अपराधियों का तंत्र।

समग्रत : गोदान के अगले स्तर की प्रगतिशीलता अधिक गहराई के साथ मैला आंचल में देखने को मिलती है। यह आजादी के बाद की वास्तविकताओं को साहित्य पहचानने की कोशिश करता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कफन कहानी प्रेमचंद द्वारा 1936 में लिखी आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है इस कहानी में गरीबी एवं भूख की विभीषिका को दिखाया है

'कफन' की संवेदना :-

(1) गरीबी में सभ्यता को खाने की क्षमता होती है।

(2) घीसू एवं माधव के माध्यम से मजदूर एवं किसानों की समस्या को बताया।

(3) घीसू द्वारा एक बार भरपेट खाने का वृतांत कितने सहजता के साथ आया है।

(4) मेहनत करने वाले को भी भरपेट भोजन नहीं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(5) पत्नी की मौत के बाद रुपये उधार लेना -

" घीसू पर विश्वास करना काले कंबल पर रंग चढ़ाना।

(6) रुपये हाथ में आने के बाद पहले भरपेट भोजन करना।

(7) भरपेट भोजन करने के बाद भी भिखारी को भोजन देना।

(8) भगवान में विश्वास नहीं करते हैं।

समग्रतः कफन कहानी वास्तविकता को पहचानती है एवं उसके अनुसार व्यवहार करती है। प्रेमचंद 1936 तक आते-आते आदर्शोन्मुख अंत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को छोड़ देते हैं। यही कहानी नई कहानी के लिए बीज कार्य करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान
(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)